Krishna Nandi) B.A I Hon's (1)

Question: → Trace the history of Abnormal Psychology. OR
Trace out the main ideas regarding abnormality Prevalent during the ancient times.
OR
"Describe the contributions of "Kraplin" "Mesmers", "Paul Janet", "Freud" and "Charcot" to the development of abnormal Psychology.

Answer: →

असामान्य मनोविज्ञान के इतिहास देखने से हमें इस बात की जानकारी होती है कि असामान्यता का अर्थ भिन्न कालों में भिन्न ढंग से लगाया जाता था। वर्तमान समय में असामान्यता की जो धारणा है वह विभिन्न धारणाओं के पारस्परिक संघर्षों की उपज है। इसकी शुरुआत जादू-टोना, धर्म से ~~लेकर विज्ञान तक~~ और अन्त विज्ञान से हुआ है। इसी सन्दर्भ में "J.e. Frazer" ने कहा है, "The Movement of higher thought has been from magic through religion to science".

कहने का अर्थ है कि उच्च विचारों के इतिहास का प्रारम्भ जादू-टोने से प्रारम्भ होकर, धर्म तक पहुँचते हुए ही विज्ञान तक पहुँचा है। असामान्य मनोविज्ञान के विकास का इतिहास की व्याख्या निम्न ढंग से किया विभिन्न कालों, युगों के अन्तर्गत किया जा रहा है →

(i) प्राथमिक युग (The primitive era).

असामान्य व्यवहार की व्याख्या का प्रारंभिक काल अन्धविश्वास से भरा था। इसयुग को आधुनिक विचारक अंधविश्वास का युग से सम्बोधित करते हैं।

Scanned with CamScanner

Krishna Nand B.A I Hons (2)

"Kisker, M.W." ने अपनी पुस्तक "Ibid" के Page
प्राथमिक युग की असामान्यता सम्बन्धी धारणाओं की व्याख्या करते हुए कहा है कि मानसिक अस्वस्थता के प्रति प्रारंभिक विचार इस विश्वास पर आधारित था संपूर्ण संसार शक्तियों भगवानों या अलौकिक शक्तियों से संचालित होता है। "Brown" ने भी इस युग की मान्यताओं के सन्दर्भ में कहा है कि अगर सामान्य व्यवहार दैवी शक्ति के माध्यम से होता है तो असामान्य व्यवहार का कारण बुरी या प्रेत शक्ति है। इस तरह असामान्यता की व्याख्या इस काल में दैवी और प्रेत शक्ति के आधार पर की गई है। "K. Stephen" ने कहा है कि प्राथमिक युग के लोग समझते थे कि सभी वस्तुओं पर दो तरह की शक्तियों का शासन था। उन शक्तियों को प्रेत शक्ति (Evil spirit) तथा दैवी शक्ति (Good spirit) कहा जाता था। सभी अच्छे एवम सामान्य व्यवहारों की व्याख्या दैवी शक्ति के आधार पर की जाती थी तथा बुरे एवम अलौकिक व्यवहार या असामान्य व्यवहार की व्याख्या प्रेत शक्ति के आधार पर की जाती थी। इस तरह प्राथमिक युग के लोग असामान्यता का कारण प्रेत शक्ति की कृपा समझते थे। कहने का तात्पर्य है कि प्रेत शक्ति व्यक्ति के शरीर में प्रवेश कर जाने से वह असामान्य व्यवहार प्रदर्शित करने लगता था। तथा उपचार के लिए जादू-टोना, झाड़-फूंक या मार-पिट का प्रयोग लोग करते थे।

लेकिन "Empedocles" and "Hippocrates" के आगमन के बाद यूनानी विचारकों के देनों पर पानी फिर गया। इन्होंने असामान्यता का कारण प्रेत शक्ति को नहीं माना बल्कि मस्तिष्क में उत्पन्न विकार को असामान्यता का आधार माना। Hippocrates (400 B.C.) के असामान्यता सम्बन्धी विचार से ही आधुनिक मत की बुनियाद पड़ी। इन्होंने कहा कि मस्तिष्क चेतना का केन्द्र है तथा मानसिक ~~अस्वस्थता~~ असामान्यता मस्तिष्क विकार के कारण होती है। इसके साथ-ही-साथ

Nand Kishor T. Hons (4)

"Philippe Pinel" (1745-1826) के आगमन से प्रति असामान्यता की व्याख्याओं का रूप परिवर्तित हो गया। इन्होंने प्राचीन मतों का तीव्र विरोध किया और मानसिक व्याधि की व्याख्या मानसिक विकार के आधार पर की। उन्होंने चिकित्सा के अमानवीय आधार का भी तीव्र विरोध किया और कहा कि रोगी को जंजीर में बंद कर उसे मार-पीट कर हो उसके रोग से मुक्त नहीं कराया जा सकता है। इस कार्य के लिए उन्होंने फ्रांस में एक चिकित्सालय की भी व्यवस्था की। इस तरह हम कह सकते हैं कि 'फिलिप पाईनेल' के कार्यों ने वैज्ञानिकता की बुनियाद डाली। फिर, अब लोगों में इस मत का संचार होने लगा कि असामान्यता मानसिक विकारों का परिणाम है न कि पापों की उपज। "Esquirol" 1772-1840 ने

अपनी पुस्तक "मानसोपचारशास्त्र" में Philippe Pinel के कार्यों का प्रसार किया। 19 वीं शताब्दि के प्रारम्भ काल में "Pinel" एवम् "Esquirol" के मानवतावादी विचार से प्रभावित होकर इंगलैण्ड में "Quaker" तथा "William Tuke" तथा अमेरीका में Benjamin Rush (1745-1813) तथा Dorothea Dix 1802-1887 ने इस दृष्टिकोण को प्रसारित किया। "William Tuke"

ने इंगलैण्ड में York Retreat नाम से एक चिकित्सालय की स्थापना की और रोगी का उपचार मानवतावादी दृष्टिकोण से करने लगा। इस कार्य में उन्हें काफी सफलता हासिल हुई। "William Griesinger" (1909) ने एक चिकित्सालय की स्थापना की।

इस तरह मध्य काल के असामान्यता सम्बन्धी विचार को देखने से यह स्पष्ट होता है कि मध्य काल का प्रारम्भ अन्धकार एवम् अंधविश्वास से जुड़ा था लेकिन इसका उतरार्द्ध ने ही वैज्ञानिकता की लहर फैलाया।

(iii) Krishna Nand B.A I

Hippocrates के विचार से वैज्ञानिकता की नींव पड़ी लेकिन यह भी अंधविश्वास से दूर हो गया। क्योंकि ईसाई धर्म के आने से लोगों में यह अंधविश्वास होने लगा कि संसार के सभी कार्यों पर दो प्रकार की शक्तियाँ ईश्वरीय शक्ति व पैशाचिक शक्ति नियंत्रण करती है। उस समय लोग यह मानते थे कि प्राणी सामान्य व्यवहार तभी प्रदर्शित करता है जब उसके क्योंकि उससे ईश्वर खुश रहते थे। पैशाचिक शक्ति के कारण असामान्य व्यवहार होता था। असामान्यता का निदान का एकमात्र उपाय पादरियों को खुश करना था।

प्रारम्भिक युग के धारणाओं पर ध्यान देने से यह स्पष्ट होता है कि इस युग पूर्णतः अंधविश्वास का काल था।

(2) "मध्य युग" "The middle Era"

असामान्यता की व्याख्या मध्यकाल में भी प्रारम्भिक काल की भाँति की गई। इस काल में सामान्य लोगों की धारणा थी कि मानसिक व्याधि भूत-प्रेत या दुष्टात्मा का परिणाम है। इसलिए इस काल को 'अन्धकार युग' (Dark age) भी कहा जाता है। लेकिन कुछ दार्शनिक एवं चिकित्सक के आगमनों से असामान्यता की व्याख्या को नई दिशा मिली। "weyer" 1514-1587 तथा "Plater" 1566-1614 ने प्रारंभिक मत का खुलकर विरोध किया लेकिन इस काल में धार्मिक अंधविश्वास ही आधार रहा। "Paracelsus" 1493-1541 ने भी धार्मिक मान्यताओं का भयंकर विरोध किया। मध्यकाल के 10 वीं शताब्दि से 15 वीं शताब्दि तक एक विशेष प्रकार का पागलपन की रूपरेखा देखने को मिला जिसे सामूहिक पागलपन कहा गया। यह जर्मनी से लेकर इटली, हालैण्ड तक फैल गया। लेकिन सामान्य जन इसका कारण मात्र भूत-प्रेत या जादू-टोना का ही प्रभाव को माना। अन्ततः हम इस निष्कर्ष पर आते हैं कि मध्यकाल का प्रारम्भ पूर्णतः अंधविश्वास एवं अन्धकार से ही परिपूर्ण था।

N.A (Hi) B.A I (5)

मनोजात-युग (Psychogenic-age) :→

मनोजात युग का विकास मनोदैहिक युग की मान्यताओं के प्रतिरोध में हुआ है। इस युग की मान्यता इस परिकल्पना पर आधारित है कि स्नायु में गड़बड़ी ही नहीं केवल असामान्यता का कारण है क्योंकि अन्य मनोवैज्ञानिक कारणों से भी असामान्य व्यवहार उत्पन्न होते हैं। इस दृष्टिकोण के विकास में सम्मोहन एवम् हिस्टीरिया (Hypnosis and Hysteria) की खोज ने काफी मदद की। असामान्यता के कारणों एवम् उपचार के प्रविधियों के सन्दर्भ में विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने काफी योगदान दिया है जिनका वर्णन निम्नांकित है →

"Mesmer" (1734 - 1814) ने मानसिक रोगों का कारण मनोवैज्ञानिक माना तथा उपचार के लिए सम्मोहन प्रविधि का प्रयोग किया। इन्होंने Vienna में इस कार्य के लिए एक चिकित्सालय की स्थापना की और Hypnosis के माध्यम से चिकित्सा की प्रक्रिया शुरू की। इनका मत था कि सम्मोहन उस गहन निर्देशन शीलता की अवस्था को कहते हैं, जिसमें सम्मोहित व्यक्ति ऐसी मोह निद्रा की अवस्था में आ जाता है जहाँ कि उसे तात्कालिक चेतनता का ज्ञान नहीं होता है। "Prof. J.F. Brow" "Ibid" P. 36 ने भी कहा है कि सम्मोहन में प्राणी की चेतना केवल सम्मोहक के निर्देशानुसार ही कार्य करती है। जब वह व्यक्ति सम्मोहन की अवस्था से वापस आता है तब उसे सम्मोहनावस्था में दिये गये निर्देश या सुझाव स्मरण नहीं रहते। इसतरह से साथ ही देखा गया है सम्मोहन की अवस्था में प्राणी कुछ ऐसी भी अनुभूतियों को व्यक्त करता है जिसका ज्ञान उसे चेतन अवस्था में नहीं रहता है।

"Mesmer" को वैज्ञानिक युगों का जनक माना जाता है। इन्होंने सम्मोहन पर Vienna में काफी अध्ययन किया और ~~18~~ 1778 ई० में एक चिकित्सा केन्द्र की स्थापना की तथा मरीजों का ईलाज प्रारंभ किया। इन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि प्रत्येक व्यक्ति में एक चुम्बकीय शक्ति होती है जिसका अधरवत